

01. इस जल प्रभाय में

— कपणीश्वरनाथ ईप्टु

01.

बाढ़ की खबर सुनकर लोगों किस तरह की तैयारी करने लगे?

बाढ़ की खबर सुनकर लोगों निंति हो रहे थे। इससे पहले आँखों को उन्होंने नहीं देखा था। बाढ़ का पानी कब तक आए, इस बारे में कुछ निश्चित नहीं था। बाढ़ के कारण उन्हें अनेक परेवानियाँ छोलनी पड़ती हैं। दुकानें बंद हो जाती हैं, तथा आने-जाने वाले रास्ते बंद हो जाते हैं। इन सभी आने-जाने की नियमों का अनुमान कर लोगों ने अपने घर में इष्टन, खाड़पदार्थ, फियो-सलाई, कंपोज की गोलियाँ, नोम-बतियाँ पीने का पानी आदि सामग्रियों का प्रबंध करने लगे। दुकानों अपने सामान को जल्दी से ऊपर ले जाने चाहते थे। लोगों अपने सामान को रिक्षा, टमटम, हस्पो और ट्रकों में लाएक अपरी स्थान की ओर जाने की तैयारी करने लगे।

02.

बाढ़ की सही जानकारी लेने और बाढ़ का रूप देखने के लिए लेखक क्यों उत्सुक थे?

मानव होने के नाते लेखक भी बाढ़ का पानी देखने हेतु जिजासा से भरे थे। उन्होंने कभी बाढ़ का अनुभव नहीं किया था लेकिन किर भी वह बाढ़ की कहानी, उपन्यास, रिपोर्ट लिख चुके थे। बाढ़अस्त स्थान को देखना तथा बाढ़ के पानी को आते हुए देखना होने का अनुभव बिल्कुल अलग होता है। लेखक के मन में भी यह इस्तेहा थी कि बाढ़ में फँसे छह लोगों का व्यवहार कैसा रहता है। बाढ़ आने पर लोगों को क्या-क्या परेवानियाँ छोलनी पड़ सकती हैं।

03. सबकी जिज्ञासा - "पानी कहाँ तक आ गया है?"
 इस कथन से जनसमूह की कौन-सी भावना व्यक्त होती है?
 सन् 1967 में पटना में लातार अंकारह घंटे तक छवर्षा होती रही
 इससे वर्षा का पानी टांगोन्ड नगर, कंकडुबाग, आदि निचले हिस्से
 में भर गया। यह पानी बढ़ते हुए शहर के अनेक लोगों के सब चीजें को
 ढूँढ़ता जा रहा था। निचले हिस्से में रहने वाले लोगों का चेहरा
 आतंक से पीला रहा पड़ते जा रहा था। हर व्यक्ति यह जानने
 चाहता था कि बाढ़ का पानी कहाँ तक पहुँचा है। और उसकी कॉलोनी में
 पहुँचने में कितना समय लायी सकता है। इसके अतिरिक्त इस आपदा से
 बचने के लिए क्या-क्या आये अपनाना चाहिए। इस प्रकार
 लोगों के कथन में अत्यधिक जिज्ञासा की भावना व्यक्त होती है।
04. 'मृत्यु का तरल फूत' किसे कहा गया है और क्यों?
 इस जल प्रलय पाठ में मृत्यु का तरल फूत बोढ़ के उस पानी को कहा
 गया है जो ऊँचे-नीचे स्थानों को ढुकोता हुआ लोगों को
 झेंयभीत करता हुआ। मृत्यु का सौंदर्शा लेकर आता है। इस जल
 प्रलय में न जाने कितने प्राणियों को उजाड़ दिया था और बदर
 करके उमौत की नींद सुला दिया था। इस तरल फूत के कारण
 काफी जान-माल का नुकसान हुआ। इसलिए इसे मृत्यु का

05. आपहाओं से निपत्ने के लिए अपनी तरफ से कुछ सुझाव दीजिए
आपहाओं से निपत्ने के लिए मैं अपनी तरफ से कुछ सुझाव देना
चाहुंगा।

- ① बाढ़ आने की संभावना को देखते हुए कुछ आवश्यक वस्तुओं रखें
मोम-बल्ली, सलाई, फँटेन, स्विमिंग, राष्ट्राणा इत्यादि ~~वस्तुओं~~ वस्तुओं
को प्रबंध कर लेना चाहिए।
- ② बाढ़ के साथ-साथ कुछ ज़ुहरीले कीड़े-मकोंहे मकोंडे घर में आ
जाते हैं। इनसे बचने की प्रबंध करना चाहिए।
- ③ बाढ़ आने की संभावना में वस्तुओं को ~~उच्चारिकाली~~ जगह पर
रखना चाहिए।
- ④ ~~बाढ़ आने प्राथमिक उपचार में काम आने वाली छद्मवारे जरूर
रख लेनी चाहिए।~~

06. 'इह! जब दोनापुर झुब रहा था तो पटनियाँ बाबू लोग उल्टकर हैर
~~करते~~ भी नहीं गए ... अब बूझो!' - इस कथन ~~द्वारा~~ लोगों की किसी
मानसिकता पर चोत की गई है?

बाढ़ के प्रत्यक्ष रूप से हैरने के लिए लेखक जब शाँदी मैदान की ओर
गया तो उसने हैरा कि शाँदी मैदान में इलिंग के सहारे हजारों भीड़-
झाड़ का तमाशा हैर रही थी। लेखक ने ~~इतनी~~ भीड़ वहाँ रामलीला के
अंवसर पर ही हैरा था। पानी भरते हैर भीड़ में से ~~एक~~ युवक ने कहा
कि जब दोनापुर झुब रहा था तो पटनियाँ बाबू का तमाशा हैर रहे थे,
अब बूझो। इस कथन से ~~संकुचित~~ मानसिकता का पता चलता है।

खरीद - बिक्री बंद हो चुकने पर भी पान की विक्री अचानक बेंगों बढ़ गई थी?

07.

सन् 1967 में पत्ना में लगातार अंतर्राष्ट्रीय लगातार बर्बाद होती रही तो जगह - जगह पानी भर गया और बाढ़ का स्तर में बढ़ने लगा। ऐसे में लोग अपने - अपने आवश्यक सामान बांधकर उचे स्थानों पर जाने लगे। लोगों में इस बात को जानने की विशेष उत्सुकता थी कि बाढ़ का पानी कहाँ तक आ गया। वे व्यारे ये बाहर आ कर एक दूसरे से बाढ़ के बारे में पूछने लगे। बाढ़ के भारे से सभी दुकानों ने भी अपनी दुकानों बंद कर दी थी। ऐसी पान की तुकाज खुली थी। लोग बाढ़ का पानी का हाल - याल जानने के लिए फैकट्री हो रहे थे। वे वहाँ बात भी करते तथा पानी भी कहाँ आ रहे थे। यही बात करने लगे। यही कारण था कि पान की विक्री अचानक बढ़ गई।

उत्तम

12/1/25

08. जब लेखक को यह अहसास हुआ कि उसके इलाके में भी पानी धुसने की संभावना है तो उसने क्या किया? प्रतीक्षा
 लेखक को जब यह अहसास हुआ कि बाढ़ का पानी उसके इलाके में भी धुस सकता है, तो वह चिंतित हो उठे। इसके लिए उसने अपने लिए कुछ आवश्यक सामान को फिट्ठा करना शुरू कर दिया। उसने सबसे पहले सिलिंडर, मोमबत्ती, फियासलाई, पीने का पानी और कांस्पोज़ की गोलियाँ आदि की व्यवस्था की।
09. बाढ़ पीड़ित होने के कौन-कौन सी बीमारियों के फैलने की आशंका है? रहती
 बाढ़ पीड़ित होनों में चारों ओर पानी मर जाता है। कुछ समय बाढ़ यह पानी तो घट जाता है, पर बाढ़ या निचले स्थानों में फिर भी जमा रह जाता है। पैर बार-बार पानी में पड़ने के कारण पकाही धाव जैसा रोग उत्पन्न हो जाता है। दूषित पानी तथा खाद्य पदार्थ पीने-खाने के कारण डायरिया, मलेरिया आदि बिमारियाँ फैलने की आशंका रहती हैं।
10. जौजवान के पानी में उतरने ही कुत्ता पानी में कूद गया। होनों ने किन आवनाओं के वशीभूत होकर ऐसा किया?
 बाढ़ पीड़ितों की सहायता करने के लिए एक गाँव में जब लेखक पहुँचा तो नाव पर अन्य लोगों के अलावा दो करते भी थे। वहाँ बीमार व्यक्तियों को नाव में बैठाया जा रहा था। उन्हें कैपले जाना था। एक बीमार जौजवान के साथ उसका कुत्ता भी झांनाग पर चढ़ आया। डॉक्टर साहब शयकीत हो चिलाकाने लगे। बीमार जौजवान पानी में उतर गया, उसके पानी में उतरते ही उसका कुत्ता भी पानी में उतर गया। कुत्ते ने ऐसा करके स्वामिभक्ति का परिचय दिया।